खंड 'ग'

साखियाँ और सबद (कबीर)

अभ्यास-कार्य—35

नाम.....	कक्षा.....	अनुक्रमांक.....	समय 20 मिनट	अधिकतम अंक 10	प्राप्तांक

कविता का सार

साखियाँ

कबीरदास जी कहते हैं कि जब आत्मा को एक बार परमात्मा के मिलन का आनंद प्राप्त हो जाता है तो फिर उसे छोड़कर कहीं अन्यत्र जाना उसके लिए असंभव है।

विरह की पीड़ा और मिलन के सुख की स्थितियों का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि आत्मा रूपी प्रेमी, परमात्मा रूपी प्रेमी को खोजता फिरता है, किंतु कहीं भी उसे परमात्मा की प्राप्ति नहीं हुई। जब आत्मा रूपी प्रेमी का परमात्मा रूपी प्रेमी से मिलन हुआ तो आत्मा रूपी प्रेमी के सारे विष (सांसारिक दुख, कष्ट) अमृत अर्थात् अलौकिक सुख में परिवर्तित हो गए।

हाथी और स्वान के उदाहरण के द्वारा कवि मनुष्य को समझाते हैं कि हाथी जब मार्ग से गुजरता है तो कुत्ते उस पर भौंकते हैं, किंतु जिस प्रकार उनकी परवाह किए बिना वह अपने मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। ठीक उसी प्रकार जब तुम ज्ञान के हाथी पर अपनी सहजता का आसन बिछाकर उस पर सवार होते हो तो तुम्हें देखकर स्वान रूपी यह संसार भौंकेगा ही, किंतु तुम इस अज्ञानी संसार की उपेक्षा कर अपने ज्ञान की पराकाष्ठा को पाने के लिए प्रयत्नशील रहो।

धर्म की विभिन्न धाराओं में उलझकर मनुष्य संसार को विस्मृत कर बैठता है। संत-पुरुष या सज्जन वही प्राणी है जो सभी सांसारिक और धार्मिक भेदभावों से हटकर, निष्पक्ष भाव से केवल ईश्वर का ही भजन करे।

राम और खुदा को लेकर स्वयं को हिंदू या मुसलमान बतानेवाले लोग मरे हुए व्यक्तियों के समान हैं। वास्तव में, सच्चा ईश्वर-भक्त तो वही है जो इन दोनों से ही दूर रहता है और कबीर की दृष्टि में ऐसा ही प्राणी जीवित माना जाता है।

मुसलमान काबा जाकर अपने पापों से मुक्त हो जाते हैं और हिंदू काशी जाकर स्वयं को आरे से चिरवाकर मोक्ष प्राप्त करते हैं। कबीर कहते हैं कि इस प्रकार की मानसिक संकीर्णता में विश्वास रखकर राम और रहीम एक हो गए हैं। किंतु यह तो मोटे आटे को पीसकर मैदा में बदलने जैसा हुआ जो किसी के लिए भी ग्राह्य हो सकता है अर्थात् यह सच्चा मोक्ष नहीं है।

संत कबीर जी के अनुसार जिस प्रकार वह पात्र सज्जनों के लिए निंदनीय होता है जो स्वर्ण का होते हुए भी अपने भीतर शराब को भरे रहता है, उसी प्रकार उस मनुष्य की भी सज्जन निंदा करते हैं जिसका जन्म तो ऊँचे, सम्मानित और प्रतिष्ठित परिवार में हुआ हो, किंतु जिसके कर्म नीच हों।

सबद

कबीर जी बताते हैं कि ईश्वर प्राणी से कहता है कि हे बंदे! तू मुझे कहाँ ढूँढ़ता रहता है, मैं तो तेरे निकट अर्थात् तेरे भीतर ही हूँ। न तो मैं हिंदुओं को मंदिर या कैलाश पर मिलूँगा और न ही मुसलमानों को मस्जिद या काबा में। न ही मैं किसी प्रकार के क्रिया-कर्म (हवन, पूजन आदि धार्मिक आडंबर) अथवा योग-साधना या संन्यास आदि से प्राप्त हो सकता हूँ। किंतु यदि तू मुझे सच्चे हृदय से खोजेगा तो मैं तुझे पल भर की तलाश से ही मिल जाऊँगा। कबीरदास कहते हैं कि हे साधुजनो! सुनो, मैं (अर्थात् ईश्वर) तो हर प्राणी की एक-एक श्वास (साँस) में बसा हुआ हूँ।

कबीर जी संतों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे भाई संतो! ज्ञान की ऐसी तेज़ आँधी आई कि भ्रम की, अज्ञान की टाटी अर्थात् बाँस के परदे को उड़ाकर ले गई और इस आँधी में सांसारिक माया भी बँधकर न रह सकी। स्वार्थ की, हित की सभी टेक अर्थात् सहारा देनेवाले खंभों को और यहाँ तक कि मोह के मज़बूत लकड़ी के छप्परों को भी इस तेज़ आँधी ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। घर के ऊपर जो सांसारिक आशाओं, आकांक्षाओं और इच्छाओं की छत थी उसे भी इसने उखाड़ फेंका। कुबुद्धि अर्थात् अज्ञान के खोखलेपन का भाँडा भी फूट गया अर्थात् भेद खुल गया।

योग आदि युक्तियों के द्वारा संतों ने किसी प्रकार इस छत को बाँधे रखा, जिससे कि उससे थोड़ा-सा भी पानी न चू (टपक) सके। किंतु जब संतों को ईश्वर के सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हुई तो इस शरीर रूपी कच्चे घर का सारा कूड़ा-कचरा अर्थात् दोष-विकार आदि निकल गए। ज्ञान की आँधी अपने पीछे जो ईश्वरीय प्रेम की वर्षा लाई थी उस प्रेम-वर्षा में ईश्वरीय ज्ञान को पहचानने वाले संत भीग उठे। इस प्रकार ज्ञान के सूर्य या प्रभात के उदित होते ही अज्ञान का अंधकार क्षीण हो गया।

Scanned with CamScanner

1. निम्नलिखित साखी को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए।

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं॥

1. मानसरोवर के जल में कौन क्रीड़ा कर रहा है? 1

उत्तर .....

2. हंस मुक्त होकर किसका आनंद ले रहे हैं? 1

उत्तर .....

3. हंस को किसका प्रतीक माना है? 1

उत्तर .....

4. मोती चुगने का क्या आशय है? 1

उत्तर .....

5. कवि ने प्रभु भक्ति में लगे साधक को क्या कहकर संबोधित किया है? 1

उत्तर .....

2. निम्नलिखित साखी को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए।

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि॥

1. कवि ने संसार को किसका रूप कहा है? 1

उत्तर .....

2. ज्ञान रूपी क्या माना है? 1

उत्तर .....

3. कवि ने कैसा 'दुलीचा' बिछाकर ज्ञान-रूपी हाथी पर सवारी करने की बात कही है? 1

उत्तर .....

4. 'भूँकन दे झख मारि' कहकर कवि ने क्या स्पष्ट किया है? 1

उत्तर .....

5. हस्ती की किस विशेषता की तुलना साधक से की है? 1

उत्तर .....

❑❑

Scanned with CamScanner

खंड 'ग'

साखियाँ और सबद (कबीर)

अभ्यास-कार्य—36

नाम.....	कक्षा.....	अनुक्रमांक.....	समय 30 मिनट	अधिकतम अंक 15	प्राप्तांक

1. निम्नलिखित साखी को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए।

पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।
निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान॥

1. तर्क-वितर्क के चक्कर में लोग किसे भूल गए हैं? 1

उत्तर .....

2. कवि ने सच्चा संत किसे माना है? 1

उत्तर .....

3. 'निरपक्ष' शब्द का सही अर्थ है? 1

उत्तर .....

4. 'हरिभजन' के लिए कैसी भावना होनी आवश्यक है? 1

उत्तर .....

5. 'पखापखी' शब्द किस भाषा से लिया गया है? 1

उत्तर .....

2. निम्नलिखित साखी को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए।

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ॥

1. प्रस्तुत साखी के कवि कौन हैं? 1

उत्तर .....

2. कवि ने कुल की अपेक्षा किसे महत्त्व दिया है? 1

उत्तर .....

3. कैसा व्यक्ति निंदनीय होता है? 1

उत्तर .....

4. उच्च कुल में उत्पन्न पाप कर्म करने वाले को कवि ने कैसा माना है? 1

उत्तर .....

5. साधु पवित्र और कीमती धातु से बने घड़े की प्रशंसा क्यों नहीं करते? 1

उत्तर .....

Scanned with CamScanner

3. [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

1. [illegible] ? 1

उत्तर

2. [illegible] ? 1

उत्तर

3. [illegible] ? 1

उत्तर

4. [illegible] ? 1

उत्तर

5. [illegible] ? 1

उत्तर

[illegible]

खंड 'ग'

साखियाँ और सबद (कबीर)

अभ्यास-कार्य—37

नाम..... | कक्षा..... | अनुक्रमांक..... | समय 40 मिनट | अधिकतम अंक 15 | प्राप्तांक

1. निम्नलिखित सबद को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए।

संतौं भाई आई ग्यौंन की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाँनी, माया रहै न बाँधी॥
हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।
त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा॥
जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी।
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी॥
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।
कहै कबीर भाँन के प्रगटे उदित भया तम खीनाँ॥

1. ज्ञान की आँधी आने से कवि का क्या आशय है? 1

उत्तर .....

2. ज्ञान की आँधी का भक्त पर क्या प्रभाव पड़ा? 1

उत्तर .....

3. तृष्णा रूपी छप्पर को संतों ने कैसे बाँधा? 1

उत्तर .....

4. आँधी के बाद जो जल मिला वह कैसे सार्थक माना गया? 1

उत्तर .....

5. काव्यांश में 'भाँन' (भानु) तथा 'तम' को किसका प्रतीक माना है? 1

उत्तर .....

2. निम्नलिखित साखी को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए।

प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ॥

1. कवि किसे ढूँढ़ता फिर रहा है? 1

उत्तर .....

2. विष अमृत कब बन जाता है? 2

उत्तर .....

संकलित परीक्षा

Scanned with CamScanner

.....

.....

.....

3. प्रेमी से क्या तात्पर्य है ? दो ईश्वर प्रेमियों के मिल जाने का क्या परिणाम होता है ? 2

उत्तर .....

.....

.....

.....

3. निम्नलिखित साखी को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए।

हिंदू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ॥

1. कवि ने हिंदू तथा मुसलमानों के बारे में क्या कहा और क्यों ? 2

उत्तर .....

.....

.....

.....

2. हिंदू और मुसलमानों की उपासना पद्धति में क्या अंतर है ? 1

उत्तर .....

.....

.....

3. प्रस्तुत साखी द्वारा कवि ने क्या संदेश दिया है ? 2

उत्तर .....

.....

.....

❑❑

Scanned with CamScanner

खंड 'ग'

साखियाँ और सबद (कबीरदास)

अभ्यास-कार्य—38

नाम.....	कक्षा.....	अनुक्रमांक.....	समय 40 मिनट	अधिकतम अंक 15	प्राप्तांक

1. निम्नलिखित साखी को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए।

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम॥

1. कबीर ने साखी के माध्यम से किस बात पर बल दिया है? 1

उत्तर .....

.....

2. 'काबा ही कासी' तथा 'राम ही रहीम' कहकर कवि क्या स्पष्ट करना चाहता है? 2

उत्तर .....

.....

.....

.....

.....

3. 'मोट चून मैदा भया' के द्वारा कवि किस ओर संकेत कर रहा है? 2

उत्तर .....

.....

.....

.....

.....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. मनुष्य ईश्वर को पाने के लिए क्या-क्या करता है? 2

उत्तर .....

.....

.....

Scanned with CamScanner

2. ईश्वर को कहाँ और कैसे पाया जा सकता है ? 2

उत्तर

3. ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? 2

उत्तर

4. कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है ? 2

उत्तर

5. कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न करके आँधी से क्यों की है ? 2

उत्तर